रिकॉर्ड :– तू है जगदम्बे काली..... ॐ पिताश्री 5/9/62

ओमशान्ति। जगदम्बा माना जगत की माँ। भक्तिमार्ग में जगदम्बा से कुछ न कुछ धन–दौलत या शरीर की बीमारी के लिए कुछ भीख माँगते रहते। उनके पास कोई हथियार आदि नहीं हो सकते; जैसे काली को दिखलाते हैं। माँगते हैं धन–दौलत। तो उसमें हथियारों की कोई बात ही नहीं। कहते हैं, हमको कोई सोना–चाँदी नहीं चाहिए, ज्ञान का कलश चाहिए। तो ज्ञान के हथियार हो गए। ज्ञान का कलश माताओं को देते हैं। तो जैसे क(लश) धारी हो गए। ज्ञान के ही हथियार, ज्ञान के ही बाण, ज्ञान कटारी भी हैं। वो है जगदम्बा, सबकी माँ। तो माँ कब कि(स)की हत्या नहीं करेगी। उन्होंने स्थूल हथियार दिए हैं। यह सब है झूठ। भक्तिमार्ग में जगदम्बा के आगे बहुत भीड़ (र)हते हैं। माँ का मान ज्यादा रहता है; क्योंकि यह फिर कुमारी भी है। ब्रह्मा कोई कुमार नहीं था। फर्क है ना। ब्रह्मा के मंदिर में इतनी भीड़ नहीं लगती और न इतने मंदिर हैं। भल करके दिलवाला मंदिर है; परन्तु जानते नहीं। उनको (ज)गतपिता तो नहीं मानते हैं ना। तुम बच्चे समझते हो, भक्तिमार्ग में जगदम्बा पास कितनी भीड़ होती है। अभी एक ओर (ज)ड़ चित्र रखे हैं, दूसरी ओर यह चेतन में बैठी है। जगदम्बा है तो अवश्य जगतपिता भी होगा। अम्मा कहा जाता है तो अवश्य जिस्मानी बच्चों की माँ होगी। पिता तो एक ही है। आत्माओं का भी पिता है तो मनुष्यों का भी पिता है। ब्रह्मा को कहते

ही हैं प्रजापिता। मनुष्य से ज़रूर मनुष्य ही आवेंगे। समझाया भी गया है, ब्रह्मा के मुखकमल से ब्राह्मण पैदा हुए। बरोबर यह ब्राह्मण ठहरे। जो झूठे ब्राह्मण भी कहते, हम ब्रह्मा की मुखवंशावली हैं; परन्तु ब्रह्मा कब आया, यह कोई नहीं जानते। फिर कहते हैं, ब्राह्मण देवी–देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः। ब्रह्मा के मुख से पहले ब्राह्मण पैदा हुए। तो ब्राह्मणों के पीछे ज़रूर देवता हुए हैं। ब्राह्मण हैं ब्रह्मा के बच्चे। ब्रह्मा है शिव का बच्चा। जो शिवबाबा ही आकर नई दुनिया, नया राज्य स्थापन करते हैं। यह समझाने की बातें हैं। जगदम्बा की पूरी जीवन कहानी लिखनी है। जगदम्बा खुद अपनी जीवन कहानी बता सकती है कि मेरे को जगदम्बा क्यों कहा जाता है, मैं कौन थी, फिर मैं किसके धर्म की बच्ची बनी। तो मनुष्य जान जाएँ। जो जिसका ऑक्युपेशन है वह स्वयं एक्युरेट समझावेंगे। मम्मा अपनी जीवन कहानी लिखे– मैं लौकिक बाप की कुमारी इतने वर्ष की थी। फिर कैसे शिवबाबा ने एडॉप्ट(धर्म का बच्चा) किया। शिवबाबा का बच्चा प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको शिव ने एडॉप्ट किया, यह हो गई मुखवंशावली। ब्रह्मा की एडॉप्शन निराली हो गई। परमपिता प॰ इनमें प्रवेश हो एडॉप्ट करते हैं। स्वयं कहते हैं, मैं इनके शरीर में बैठ, जो भी बच्चे आते हैं उनको एडॉप्ट करता हूँ। तो ब्रह्मा फिर भी प्रजापिता ठहरा। सारी प्रजा है ना। राष्ट्रीय पिता भी कहा जाता है। राष्ट्रीय भारत को कहेंगे। वास्तव में हिन्दुस्तान नाम नहीं है। तो राष्ट्रीय पिता व पति एक ही बात है। वे लोग तो ऐसे ही कह देते हैं। जैसे कोई मेयर बनता है तो उनको भी शहर का बाप कहते हैं। अब तुम बरोबर जगदम्बा की गोद लेते हो। इन पर बलि चढ़ते हो। तुम जानते हो यह ही राज–राजेश्वरी गौरी थी, जो आधा कल्प राज्य कर फिर जब काम चिक्षा पर बैठी तो अंत में साँवरी हो गई। सतोप्रधान और तमोप्रधान होती है ना। पहले गोल्डन–सिलवर फिर कॉपर–आयरन की खाद पड़ी। बाकी कोई कृष्ण साँवरा नहीं था। पतित–पावन सीता–राम कह देते हैं। वो भी रॉंग हो गया। यदि वो राम होता तो फिर हाथ में रामायण होती। उसने तो हाथ में गीता उठाई और कह दिया– पतित–पावन सीता–राम। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। घोर अंधियारे में हैं। इसलिए उन्हों को अंधों की औलाद भी गाया हुआ है। कहते हैं ना– अंधों की लाठी, प्रभु! आप आकर सज्जा करो। बुद्धि हरेक बात को जान जाती है। प॰ स्वयं बैठ समझाते हैं। रचयिता अपना परिचय स्वयं देते हैं। तो अब तुम जानते हो, इनका(जगदम्बा) जड़ मंदिर भी है और यह चेतन में बैठी है; क्योंकि संगम है ना। चेतन भी चाहिए, जड़ भी चाहिए। भक्तिमार्ग भी है और भक्तों को ज्ञान देने वाला भी हाज़रा हजूर है। मंदिर बने हैं तो अवश्य कब उपस्थित हुए हैं।..... शिव भी उपस्थित हुआ है। ब्र॰वि॰शं॰ तीनों ही होंगे तब तो कहेंगे– हाँ, हाज़र है। तुम बुद्धि से जानते हो, बाकी नाज़र अक्षर रॉंग हो जाता। परमपिता प॰ के लिए कहते हैं, हाज़र–नाज़र है। आँखों से देखते हैं, यह कहना तो रॉंग है; क्योंकि जिस्मानी आँखों से तो उनको कोई देख न सके। बाकी जान सकते हैं, देख नहीं सकते। बरोबर स्वयं कहते हैं, मैं इनमें प्रवेश हो ब्राह्मणों को रचकर ज्ञान देता हूँ। यह है इनका बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। इस समय सब तमोप्रधान हैं। सतोप्रधान ही आकर तमोप्रधान बना है। सन्यासी तो सतोप्रधान थे नहीं। वे आए ही हैं रजोगुणी दुनिया में। सतोप्रधान और तमोप्रधान भारत ही बनता है। और कोई सतोप्रधान समय में आ न सके। भारत को ही प्राचीन देश कहते हैं। भारत मालामाल कैसे बना, यह कोई नहीं जानते हैं। सतयुग के(को) बहुत दूर ले गए हैं। दिखलाते भी हैं कि असुरों की लड़ाई हुई है। महाभारी–महाभारत लड़ाई हुई। फिर जयजयकार होगी। तो अवश्य कलियुग का अंत होगा तब तो जयजयकार हो। सतयुग स्थापन हुआ होगा। द्वापर में तो जयजयकार हो न सके। द्वापर के बाद तो और ही कलियुग आया, हाहाकार हुआ। देखो, रावण को जलाते रहते। रावण का राज्य तो अब खलास होना है। बाबा आकर सारी रावण

सृष्टि को खलास कर देते हैं। बाकी बन्दर की पूँछ को आग लगी, ऐसे तो बात है नहीं। बंदर सेना फिर वे(यादव) हो गए। आग तो उनसे लगती है। वे हैं आग लगाने वाले बंदर। यह तो प्रैक्टिकल समझानी है। मनुष्य तो झूठ बोल देते हैं। हम हरेक बात समझा सकते हैं। शिव के मंदिर भी हैं। अवश्य वह आए होंगे, अवतार लिया होगा, आकर नई दुनिया की स्थापना की होगी। भगवान ने भारत को बहुत सुख दिया है, तब उन्होंने इतने आलीशान मंदिर बनाए हैं। ऐसे आलीशान मंदिर और कोई के कब बन न सके। कितने हीरे–जवाहरात थे मंदिरों में! अभी तो भारत कौड़ियों मिसल है। पहले हीरे मिसल था, तब तो इतने मंदिर बनाय। कोई बहुत वर्षों की बात नहीं। गज़नबी को आए 4–5 सौ साल हुआ होगा। आजकल तो मंदिरों से भी चोरी कर ले जाते हैं। वहाँ तो बहुत सभ्यता रहती है। वहाँ थोड़े ही चोरी–चकारी होती होगी। यह तो बाहर वाले पीछे आए, जो बाहुबल के जोर से लूट ले गए। मुसलमानों के हाथ में बहुत था, जो सच्ची–2 मणियाँ निकाल ले गए। झूठे थोड़े ही कोई निकालेगा। मनुष्यों की बुद्धि ऐसी मारी हुई है जो यह भी नहीं जानते कि यह तो अभी–2 की बात है। अरबों वर्ष की चीज़ रह कैसे सकती! पुरानी मूर्तियाँ घिस जाती हैं। अरबों वर्ष हो तो पता नहीं क्या हो जाए। दुनिया में कितना घोर अंधेरा है। बाबा आकर रोशनी करते हैं। आरती उतारते हैं ना। सब नहीं उठाते, एक उठाता है, फिर सब उसमें पैसा डालते हैं। जैसे ग्रंथ की आरती उतारते हैं, पैसा रखते हैं। वे भी नानक के नाम पर, सत्गुरु के नाम पर रखते होंगे। यहाँ भी मम्मा के आगे बलि चढ़ते हैं। बलि चढ़ना इसी को आरती कहा जाता है। तो यह भी समझाना पड़े; क्योंकि अभी पूजा का टाइम है। यह(मम्मा) लिखे कि तुम बहुत भूल करते हो। वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी कर रहे हैं। मैं एक ही जगदम्बा हूँ। सबकी माता तो एक है ना। उनका भी अवश्य मनुष्य रूप होना चाहिए। मम्मा पर तो ज्ञानामृत का कलश है। तुमको मानुष से देवता बनाने वाली है। तो यह कहेंगी– हमारे पास तो कोई हथियार व बैंजू आदि कुछ नहीं है। मैं वही हूँ। जो राजयोग प॰पि॰प॰ ब्रह्मा द्वारा सिखला रहे हैं। वो हम भी सिखलाते हैं। हम यह सर्विस करने से राज–राजेश्वरी बनती हैं। यह राजयोग है। तुम भी राजयोग सीख फिर से राज्य–भाग्य लो। देवियों की पूजा बाद फिर लक्ष्मी की पूजा होती है। ल॰ भी मैं ही बनती हूँ। सारी राजधानी बनती है। तुम मुझ लक्ष्मी से धन माँगते हो, तिजोरी में डालते हो। वो है भक्तिमार्ग का अल्पकाल का सुख। ब्रह्माकुमारी वो जो 21 पीढ़ी का राज्य–भाग्य दे। बरोबर यह सब बी॰के॰ हैं। मैं एक तो नहीं हूँ, बहुत हैं जिनसे भविष्य में 21 जन्मों का वर्सा मिल सकता है। कुमारियाँ और कुमार, दोनों हैं। ब्रह्मा के मुख से दोनों निकलते हैं। तो उन्हों से आकर यह राजयोग सीखो और अपना 21 जन्मों का पद पाओ। भक्तिमार्ग में तो तुम सब गुड़ियों की पूजा कर पैसा बरबाद करते आए हो। कितने मूर्ख दिखाई पड़ते हैं! माया ने बुद्धि को तमोप्रधान बना दिया है। तो समझाना है कि जगतअम्बा एक ही है। हमारे पास ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र हैं। हम तुमको माया पर जीत पहनाते हैं, योग सिखलाते हैं, जिससे तुम एवरहेल्दी और ज्ञान से एवरवेल्दी बनेंगे। मम्मा जैसे कि डायरैक्ट लिखती है। इनको डायरैक्शन मिलती है। बाबा भी डायरैक्शन देते हैं। ब्रह्मा जो डायरैक्शन देते हैं वो अवश्य मुझ(शिव) से सुनते होंगे व मेरी प्रेरणा से देते होंगे। तुम यह लाखों रुपए फालतू बरबाद करते हो। इतने झूठे कलंक लगाए हैं वो सब लिखना चाहिए। कैसे हेविनली गॉड फादर स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। हम भी स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं। तुम भी आकर बनो। पतित–पावन एक ही है। प॰ है। दशहरे पर भी लिखना चाहिए– रावण आदि बनाना, यह तो गुड़ियों की पूजा है। रावण का राज्य तो और ही पक्का हो गया है। पहले तो तुम कुछ सुखी थे, अब और ही दुखी हुए हो। राव(ण) राज्य तमोप्रधान बनता जाता है।

दुख का राज्य है। तो मम्मा को लिखना पड़े। मम्मा भी अच्छे–2 प्वाइंट्स सुनाती हैं, जो कब बाबा ने अथवा शिवबाबा ने न सुनाए हैं। विचार–सागर–मंथन करने से प्वाइंट्स आती हैं। मम्मा का बहुत नाम है। कितने मंदिर हैं। ब्रह्मा के मंदिर इतने नहीं, न भीड़ होती है। जगदम्बा के मंदिर पर बहुत भीड़ होती है। माँ का नाम मीठा लगता है। तो जगदम्बा ललकार करेगी– अजन थोड़ा टाइम पड़ा है। ऐसे न होना चाहिए, जो समय पर चीज़ तैयार न हो। सदा समय पर लिटरेचर पहुँचता नहीं है। न पहुँचने कारण फिर हरेक अपना कुछ न कुछ छपा लेते हैं। ब्लॉक्स अच्छे नहीं, चित्र अच्छे नहीं। एक जगह छपे तो अच्छा है। बिगर लिखत चित्र डाल देते हैं। अक्षर बड़े–2 चाहिए। हमारा काम ही है ज्ञान से। बिगर ज्ञान चित्र भी कोई काम का नहीं। पतले अक्षर छपाना बुद्धि की कमजोरी कही जाती। ऐसे थोड़े ही छपवाना चाहिए जो कोई पढ़ भी न सके। अभी तक सतोप्रधान बुद्धि न बने हैं। इस समय समझो, रजो बुद्धि हैं। फिर उनमें भी नम्बरवार हैं। तमोप्रधान बुद्धि तो यहाँ हो नहीं सकती। दास–दासियाँ, महतर आदि सब यहाँ ही बनने तो हैं। जो यहाँ बाबा के यज्ञ में कचड़ा डालेंगे तो वहाँ भी फिर कचड़ा उठाना पड़ेगा। बहुत–2 सज़ाएँ खावेंगे। बाबा ने समझाया है कि कसम बाप को क्यों उठाते हैं; क्योंकि उनका डर है। वही बाप धर्मराज भी है। हमारे अंदर को वो जानते हैं। तो यदि हमने कोई भूल की तो दंड भोगेंगे। दंड तो धर्मराज रूप में ही देंगे। तो हमको सुप्रीम धर्मराज भी लिखना चाहिए। अंत में सबको दंड देने वाला वह है। यह भी लिखना चाहिए– ईश्वर का कसम क्यों उठाते हैं? अभी बाप बन पढ़ाते हैं। कहते हैं, कुछ विकर्म किया तो धर्मराज के रूप में दंड दूँगा। अच्छा, मम्मा आज कंवलगट्टे टोली खिलाती है। (कंवलगट्टे का टोकरा कपड़े से ढका हुआ संदली पर रखा है।) इसको कहते हैं कंवलडोडे। कोई को 6 बचे होंगे, कोई को 8, कोई को 12, कोई को 15–18 बचे भी होंगे। बाबा गारंटी करते हैं, हरेक को 12 डोडे अवश्य मिलेंगे। इनसे कम नहीं। 12 से अधिक निकले तो हर्जा नहीं है। हरेक इस टोकरी से बगैर देखे कंवरगट्टे उठाते जावें। फिर जिसके कम होंगे तो हम उनको और दे देंगे। (फिर तो हरेक ने पवने उठाई। जिसके कम डोडे निकले उन्हों को फिर कंवलगट्टे बापदादा ने दी। वो सीन भी बड़े अनोखे थे रमतगमत के। ॐ